अध्याय - 8
ग्रामीण नगरीय अन्तर्सम्बन्ध

8.1 प्रस्तावना -

ग्रामीण नगरीय अन्तर्सम्बन्ध की परिकल्पना, आन्द्रे एलिक्स, द्वारा प्रतिपादित 'आर्थिक क्षेत्र' अथवा उपनगरीय क्षेत्र की मूल संकल्पना से लिया गया है। यह तब और अधिक स्पष्ट हो गया जब 1931 में जैफरसन ने टिप्पणी की, कि नगरीय केन्द्रों का विकास अपने आप ही नही होता वरन् यह पृष्ठ प्रदेश (आस–पास का प्रदेश) है जो उन्हें उन कार्यों को करने के लिए व्यवस्थित करता है, जिन्हें वे सम्पादित करते हैं। कोई भी केन्द्रीय स्थान न तो अपना अस्तित्व स्वयं अपने आधार पर ही बनाए रख सकता है और न ही अपनी सम्पूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं के संसाधनों से कर सकता है।

8.2 ग्रामीण-नगरीय सम्बन्धों की अवधारणा -

प्रत्येक नगरीय सेवा केन्द्र के चारों ओर पृष्ठ प्रदेश से सामाजिक, आर्थिक अन्तर्सम्बन्ध के रूप में कार्यात्मक एकता का क्षेत्र विकसित हो जाता है। नगरीय केन्द्रों में व्यक्तियों का ऐसा समूह संकेन्द्रित होता है जो अपना खाद्यान्न स्वयं उत्पन्न नहीं करते वरन् आहार के लिए कृषकों पर निर्भर रहते हैं तथा वे (कृषक) अपनी आवश्यकताओं के लिए नगरीय केन्द्रों के बाजारों पर निर्भर रहते हैं। यह एक स्वीकृत तथ्य है कि अधिकांश सामाजिक तथा आर्थिक नवनिर्माण, नगरीय सेवा केन्द्रों में ही होता है और इस प्रकार जहाँ एक ओर नगरीय केन्द्रों के नागरिक आहार के लिए कृषकों पर निर्भर रहते हैं, वहीं कृषक नवनिर्माण के लिए नगरीय केन्द्रों पर निर्भर रहते हैं। यह स्पष्ट करता है कि समाज के ग्रामीण तथा नगरीय केन्द्रों में होने वाले सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन पूर्णतया भिन्न दिशाओं में हो, ऐसी सम्भावनाएं बहुत ही कम होती हैं।[1]

ग्रामीण–नगरीय पारस्परिक निर्भरता के सम्बन्ध में प्रो0 मिश्रा एवं भूषण[2] का विचार है कि ''नगरीय केन्द्र, कृषि क्षेत्र के बढ़ते हुए उत्पादन के लिए ही सेवाएं उपलब्ध नहीं कराते वरन् सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक के रूप में नव निर्माण तथा कार्य भी उपलब्ध कराते हैं। उन्हें औद्योगीकरण तथा अर्थतन्त्र की विविधता से परिचित कराने की भूमिका भी सौंपी गयी है ताकि कृषि क्षेत्र से अतिरिक्त व्यक्तियों को भी रोजगार मिल सके। लघु तथा मध्यम आकारकीय नगरीय केन्द्रों पर वर्तमान दबाव इस तथ्य पर आधारित है कि वे ग्रामीण जनसंख्या के अधिक निकट हैं और इसी कारण इनका प्रभाव अधिक है, साथ ही ये महानगरों में विद्यमान अमानवीय परिस्थितियों से भी बचाते हैं।

8.3 प्रभाव क्षेत्र का सीमांकन –

प्रस्तुत अध्याय में नगरीय केन्द्रों तथा ग्रामीण क्षेत्रों के अन्तर्सम्बन्धों का विश्लेषण उनकी पारस्परिक क्रियाओं का परीक्षण करके किया गया है। क्षैतिज विस्तार नगरीयकेन्द्र के प्रभाव क्षेत्र से सीधे रूप में सम्बन्धित होता है यहाँ यह कहना व्यर्थ होगा कि एक नगरीयकेन्द्र जैसी कि अवधारणा है, मानव अधिवास के एक समूह को जोकि एक क्षेत्र में फैला होता है की सेवा करता है यह अधिवास समूह छोटा हो या बड़ा यह सेवा केन्द्र पर निर्भर है और इस प्रकार वस्तुओं की विविधता के लिए एक सेवा केन्द्र उस सम्पूर्ण क्षेत्र पर निर्भर रहता है जिसे वह सेवा उपलब्ध कराता है। यही कारण है कि सेवा केन्द्र तथा उस पृष्ठ प्रदेश जिसकी वह सेवा करता है के मध्य सशक्त सामाजिक तथा सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित होता है और यह अध्ययन क्षेत्र के नगरीयकेन्द्रों के व्यवहारिक तथा सैद्धान्तिक सेवा क्षेत्रों को परिसीमन करके किया गया है। इस अध्याय में जनपद औरैया के ग्रामीण नगरीय सम्बन्धों की वर्तमान स्थिति का भी विश्लेषण किया गया है।

यह कार्य स्थिति का अध्ययन करके एवं नगरीय केन्द्रों की भूमिका के प्राथमिक आंकड़ों तथा नगरीय केन्द्रों के अतिरिक्त ग्रामीण जनसंख्या की

स्थिति का अध्ययन करके किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में जनपद औरैया के 7 नगर केन्द्रों के प्रभाव क्षेत्र का सीमांकन तो किया ही गया है। सापेक्षिक महत्व ज्ञात करने हेतु अन्य नगरीय सेवा केन्द्रों को सम्मिलित किया गया है ताकि यह स्पष्ट हो सके कि उनके मध्य और बड़े नगरों की तुलना में इन नगरीय सेवा केन्द्रों की नगरीय क्षेत्र की सेवा में क्या भूमिका है को भी निर्धारित किया गया है।

प्रभाव क्षेत्र की प्रकृति -

वे नगरीय केन्द्र जो ग्रामीण क्षेत्रों के संसाधनों के आधार पर विकसित होते हैं, प्रायः परस्परावलम्बी होते हैं अर्थात ग्रामीण अंचलों से नगरीय केन्द्रों को विभिन्न सुविधायें प्राप्त होती हैं, जैसे– दुग्ध, शाक–भाजी, फल, खाद्यान्न, श्रम तथा औद्योगिक कच्चा माल आदि। इनके बदले नगरीय केन्द्र ग्राम्य क्षेत्रों को विभिन्न सेवा–सुविधायें प्रदान करते हैं, चेतनता एवं जीवंतता देते हैं। नगरीय केन्द्रों में सम्पादित होने वाली क्रियाओं से न केवल नगरीय केन्द्रों में निवास करने वाली जनसंख्या ही प्रभावित होती है वरन् निकटवर्ती ग्राम्यजन भी लाभान्वित होते हैं। इस प्रकार किसी नगर विशेष से पोषित क्षेत्र 'नगर प्रभाव क्षेत्र' कहलाता है। स्थानिक संगठन की दृष्टि से इसे 'भौगोलिक प्रदेश' की संज्ञा भी दी जा सकती है। नगर प्रभाव क्षेत्र का विस्तार या प्रसार नगरीय कार्यों तथा विशिष्टिताओं के प्रभाव के अनुपात में होता है अर्थात प्रभाव क्षेत्र में विविधता प्रसार (संकुचन) अवश्यम्भावी है। यह वैविध्य नगरीय सेवा सुविधाओं के स्वभाव व पोषक क्षमता पर आधारित है।

कई विद्वानों नें स्वीकारा है कि नगरीय केन्द्र का उसके प्रभाव क्षेत्र से अन्योन्याश्रित सम्बन्ध रहता है। यह जानकारी प्राप्त करना अभीष्ट है कि किस प्रकार एक नगरीय केन्द्र और उसके समीपवर्ती वातावरण पर क्या प्रभाव छोड़ रहा है। इस वातावरण में नगरीय केन्द्र अपने समीपस्थ क्षेत्रों पर समीक्षा का कार्य करता है। नगरीय केन्द्र के प्रभाव का वह क्षेत्र जो उसके चतुर्दिक

विस्तीर्ण होता है को सीमाबद्ध करके अध्ययन द्वारा निरुपित किया जाता है। नगरीय केन्द्र ग्रामीण क्षेत्र पर व्यापक प्रभाव डालता है। नगरीय केन्द्र अपने प्रदेश का प्रतिबिम्ब है, नगरीय जनसंख्या का बड़ी मात्रा में आकर्षण उसी क्षेत्र की उपज होती है।

यू0 सिंह[3] ने ''अमलैण्ड'' (Umland) शब्द का प्रयोग 'National Geographical Journal of India' में प्रकाशित अपने शोध लेख 'Umland of Allahabad' में किया है। पृष्ठ भूमि से आशय उस क्षेत्र से है जिसके साथ संचार अधिक नहीं है बल्कि कुछ कम हो और प्रभाव क्षेत्र वह है जहाँ संचार अपवाद स्वरूप हो। जैसा कि राबर्ट डिकिन्सन ने निर्दिष्ट किया है कि प्रत्येक नगरीय बसाव चाहे वह बड़ा हो अथवा छोटा कामोवेश एक प्राकृतिक सम्पदा है। ''उमलैण्ड'' जर्मन भाषा का एक शब्द है जिसका अर्थ चारों ओर का क्षेत्र। इस शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम आन्द्रे एलिक्स[4] ने 1914 में किया था। भारत में इस शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम रामलोचन सिंह ने किया।''[5]

सारणी क्रमांक 8.1

जनपद औरैया : नगरों का प्रभाव क्षेत्र

क्र0 सं0	नगर का नाम	नगर क्षेत्र वर्ग किमी0 में	नगर की जनसंख्या	सेवित क्षेत्रफल
1	औरैया	08.00	64740	772.05
2	विधूना	04.70	24789	295.62
3	अजीतमल	05.00	24549	292.75
4	दिबियापुर	03.25	20595	245.60
5	फफूंद	05.00	15340	182.93
6	अटसू	05.80	10593	126.32
7	अछल्दा	05.15	08361	99.73
	जनपद औरैया	36.90	168967	2015.00

स्रोत : सांख्यिकीय गणना पर आधारित।

8.4 प्रभाव क्षेत्र सीमांकन की प्रविधियाँ –

वर्तमान समय में नगर केन्द्रों के 'प्रभाव क्षेत्र' के सीमांकन को अतिशय महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। बहुत से पाश्चात्य विद्वानों के साथ ही भारतीय विद्वानों ने भी नगरीय सेवा केन्द्रों के प्रभाव क्षेत्र का अध्ययन करने के साथ–साथ सीमांकन करने का प्रयास किया है। आर0एस0 दीक्षित[6] ने भी कानपुर महानगर के प्रभाव क्षेत्र का निर्धारण किया है। प्रमुख रूप से प्रभाव क्षेत्र सीमांकन की निम्नलिखित विधियाँ हैं –

1. गुणात्मक विधि
2. मात्रात्मक विधि।

1. गुणात्मक विधि –

गुणात्मक विधियाँ मूल रूप से डिकिन्सन द्वारा प्रयुक्त विधि पर ही आधारित हैं। उन्होंने प्रभाव क्षेत्र के सीमांकन के लिए विभिन्न तथ्यों जैसे–थोक बिक्री, फुटकर बिक्री, व्यापार, शिक्षा, चिकित्सा, समाचार पत्रों का प्रसारण, अभिगम्यता तथा कृषि व्यापार इत्यादि का प्रयोग किया। कुछ विद्वानों जैसे – ग्रीन[7], ब्रूस[8], तथा ब्रसी[9] ने प्रभाव क्षेत्र के सीमांकन के लिए मात्र एक तथ्य बस सेवा को ही आधार मानकर प्रदर्शन किया। भारतीय विद्वान आलम[10] ने प्रभाव क्षेत्र के सीमांकन के लिए ब्रिटिश भूगोलवेत्ताओं द्वारा प्रयुक्त विधियों का ही अनुसरण किया। मिश्रा[11] महोदय द्वारा नवीन विधितंत्र पर आधारित अति विस्तृत तथा व्याख्यापूर्ण पुनरीक्षण तैयार किया गया। अधिकांश विधियों का प्रयोग नगरीय प्रभाव क्षेत्र के सीमांकन के लिए किया गया।

2. मात्रात्मक विधि –

प्रभाव क्षेत्रों के सीमांकन हेतु वर्तमान समय में मात्रात्मक विधियाँ अत्यधिक लोकप्रिय हो गयी हैं। यह विधि नगर तन्त्र के एक अंग के रूप में व्यवहृत की जा सकती है। इसके अतिरिक्त गुणात्मक तथा मात्रात्मक सीमांकन की तुलना भी की जा सकती है एवं इन दोनों सीमाओं के

सम्बन्ध में आवश्यक तर्क भी प्रस्तुत किये जा सकते हैं।[12] यह विधि अधिकांश भूगोलवेत्ताओं द्वारा प्रभाव क्षेत्रों के सीमांकन हेतु प्रयोग में लाई गयी है।

पूर्ववर्ती अध्ययन -

नगरीय केन्द्रों तथा पृष्ठ प्रदेश (चारों ओर के क्षेत्र) के सामाजिक–आर्थिक अन्तर्सम्बन्धों को सेवा क्षेत्र के नाम से जाना जाता है। अपने प्रभाव क्षेत्र में परिवहन और संचार के साधन के रूप में नगर सन्धि स्थल का कार्य करते हैं। अतः नगर तथा आस–पास के क्षेत्रों के अन्तर्सम्बन्ध का अध्ययन भूगोलवेत्ताओं के लिए परमावश्यक है। नगरीय केन्द्रों की समस्याओं तथा उनकी प्रकृति को समझने का मूल आधार ग्रामीण नगरीय अनुबन्धन है।[13]

ए0के0 दत्ता[14] ने अपने शोध–लेख में जमशेदपुर नगर के प्रभाव क्षेत्र का निर्धारण किया था। इसी श्रृंखला में ए0बी0 मुखर्जी[15] ने मोदीनगर के उमलैण्ड का निर्धारण किया था। वी0नाथ[16] ने Deccan Geographer में 'The Concept of Umland and its Delimitation' पर अपना शोध–पत्र प्रकाशित किया था। 'Umland श शब्द के प्रयोग का श्रेय फ्रांसीसी प्रो0 एलिक्स (Allix, A.) को जाता है जिन्होंने जर्मन फ्रांस शब्दकोश से इस शब्द को उद्धृत करके आर्थिक साम्राज्य से लिया।[17] यह तब और अधिक स्पष्ट हो गया जब 1931 में जैफरसन ने टिप्पणी की कि ''नगरीय सेवा केन्द्रों का विकास अपने आप ही नहीं होता वरन् यह पृष्ठ प्रदेश (आस–पास का प्रदेश) ही है जो उन्हें उन कार्यों को करने के लिए व्यवस्थित करता है जिन्हें वे सम्पादित करते हैं।[18]

कोई भी केन्द्रीय स्थान न तो अपना अस्तित्व स्वयं अपने आधार पर ही बनाये रख सकता है और न ही अपनी सम्पूर्ण आवश्यकताओं की

पूर्ति ही स्वयं के संसाधनों से कर सकता है यह (नगरीय सेवा केन्द्र) पृष्ठ प्रदेश की सेवा, विभिन्न सामाजिक–आर्थिक सेवाओं को सम्पन्न करके पूरा करता है। इन सेवाओं में शिक्षा, चिकित्सा, बैंक, व्यवसाय, वाणिज्य एवं व्यापार, बस सेवाओं, समाचार पत्र प्रसार तथा रोजगार के अवसर प्रदान करना प्रमुख है। पृष्ठ प्रदेश इसके बदले में मांग उत्पन्न करके तथा केन्द्रीय स्थानों में होने वाले उत्पाद उद्योगों के लिए आपूर्ति बाजार पैदा करके, नगरीय केन्द्रों की सेवा करते हैं और इस प्रकार नगरीय सेवा केन्द्र तथा पृष्ठ प्रदेश का यह अन्तर्सम्बन्ध ही एक ऐसे क्षेत्र को जन्म देता है जिसका सीमांकन स्थानिक तथा कार्यात्मक अध्ययन के लिए आवश्यक हो जाता है। वर्तमान सन्दर्भों में सेवा क्षेत्र को सूक्ष्म स्तरीय नियोजन के रूप में विचार किया जाता है। नगरीय केन्द्रों के सेवा क्षेत्रों का प्रदर्शन कुछ सांख्यिकीय विधियों के माध यम से किया गया है। अतः 'नगरीय क्षेत्र', 'परिनगर', पृष्ठ प्रदेश', 'नगर क्षेत्र', 'प्रभाव क्षेत्र', 'सेवा क्षेत्र', पोषक क्षेत्र' तथा 'पूरक क्षेत्र' ये सम्पूर्ण शब्द लगभग एक जैसे अर्थ का ही प्रदर्शन करते हैं तथा एक जैसे संदर्भ में ही उनका प्रयोग किया जाता है।

8.5 नगरों के आदर्श सेवाक्षेत्र –

शोधार्थी ने इस हेतु अध्ययन क्षेत्र के 7 नगरीय सेवा केन्द्रों का चयन किया और चार चरों के आधार पर प्रश्नावली के माध्यम से प्रवाह विश्लेषण करने का प्रयास किया है। प्रत्येक सेवा केन्द्र के लिए दुग्ध, सब्जी, श्रम सेवा और शिक्षा को आधार माना है। उल्लिखित चरों के आधार पर ही सेवा केन्द्र के सेवित क्षेत्रफल व सेवित जनसंख्या का निर्धारण किया गया है नगरीय सेवाकेन्द्रों के आदर्श सेवा क्षेत्र आदर्श परिस्थितियों में किसी नगरीय सेवा केन्द्र का प्रभाव सभी दिशाओं में समान रूप से ही आगे बढ़ता है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि नगरीय सेवा केन्द्र का प्रभाव क्षेत्र आकार में वृत्ताकार होना चाहिए, परन्तु यथार्थ के धरातल पर ऐसा बहुत ही कम होता है। अध्ययन क्षेत्र में रिक्त स्थान तथा

अतिव्याप्त क्षेत्र को ज्ञात करने में यह सहायक होता है। शब्द अतिव्याप्त क्षेत्र का तात्पर्य ऐसे क्षेत्र से है जहाँ एक से अधिक नगरीय सेवा केन्द्रों द्वारा सुविधाएं प्रदान की जा रही हों तथा रिक्त स्थान अथवा रिक्त क्षेत्र का तात्पर्य ऐसे क्षेत्र से है जहाँ के रहने वाले व्यक्तियों को किसी भी नगरीय सेवाकेन्द्र द्वारा सुविधायें प्रदान न की जा रही हों।

यह माना जाता है कि अति व्याप्त क्षेत्र तुलनात्मक रूप से बेहतर सुविधा वाले क्षेत्र होते हैं और यही कारण है कि इस क्षेत्र में होने वाले किसी भी सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन का प्रभाव शीघ्र दृष्टिगोचर होता है दूसरी ओर रिक्त क्षेत्र सुविधाओं के अवसंरचनात्मक जाल के अभाव को प्रदर्शित करते हैं और यही कारण है कि वहाँ पर तीव्र सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन व्यवहारिक रूप से सम्भव नहीं है। सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों के लाभों को सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र में एकरूपता से वितरित करने के लिए नगरीय सेवा केन्द्रों का अवसंरचनात्मक विश्लेषण करना अनिवार्य हो जाता है। नगरीय सेवा केन्द्रों के आदर्श सेवा क्षेत्रों का प्रदर्शन करने के लिए प्रो0 राव द्वारा प्रयुक्त सूत्र का प्रयोग किया गया है। इस प्रतिमान के अनुप्रयोग में एक ही तथ्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है और वह यह है किसी भी नगरीय सेवा केन्द्र की जनसंख्या और उसके सेवा क्षेत्रों में अत्यन्त निकट का सम्बन्ध होता है। इस प्रकार नगरीय सेवा केन्द्र का सेवा क्षेत्र उस नगरीय सेवा केन्द्र की जनसंख्या का समानुपाती होता है। प्रस्तुत अध्ययन में सेवा केन्द्र के सीमांकन में निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया जाता है –

$$R = \frac{T \times A}{U}$$

जहाँ A= अध्ययन क्षेत्र का क्षेत्रफल

U= कुल नगरीय सेवा केन्द्रों की जनसंख्या

T= किसी नगरीय सेवा केन्द्र की जनसंख्या

R= वृत्त का अर्द्धव्यास

उपरोक्त सूत्र का प्रयोग करके किसी भी नगरीय सेवा केन्द्र के सेवा क्षेत्र के लिए खींचे जाने वाले वृत्त का अर्द्धव्यास ज्ञात किया जाता है। उक्त सूत्र के आधार पर ही नगरीय सेवा केन्द्र के सेवा क्षेत्र का क्षेत्रफल भी ज्ञात किया जा सकता है। क्षेत्रफल ज्ञात करने के लिए उपर्युक्त सूत्र का ही संशोधित स्वरूप प्रयुक्त किया जो निम्नवत् है –

$$S.A. = \frac{T \times A}{U}$$

जहाँ S.A. = सेवा क्षेत्र

T = नगरीय सेवा केन्द्र की जनसंख्या

A = अध्ययन क्षेत्र का क्षेत्रफल

U = अध्ययन क्षेत्र की कुल नगरीय जनसंख्या

सारणी क्रमांक 8.2

जनपद औरैया : नगरों के आदर्श सेवाक्षेत्र

क्र0 सं0	नगर का नाम	नगर द्वारा सेवित क्षेत्रफल (वर्गकिमी0में)	कुल क्षेत्रफल का प्रतिशत
1	औरैया	813.70	40.38
2	विधूना	394.90	19.60
3	अजीतमल	225.85	11.21
4	दिबियापुर	224.30	11.13
5	फफूंद	150.70	07.48
6	अटसू	135.30	06.71
7	अछल्दा	70.25	03.49
	जनपद औरैया	**2015.00**	**100.00**

8.6 रैली की विच्छेद बिन्दु विधि –

रैली का विच्छेद बिन्दु समीकरण[19] भी इस प्रकार के तथ्यों पर

आधारित है। रैली का विच्छेद बिन्दु समीकरण का सूत्र निम्न प्रकार है–

$$\text{Breaking Point} = \frac{\text{Distance of A \& B}}{\sqrt{1 + \frac{\text{size of A}}{\text{size of B}}}}$$

कुछ अध्ययनों में उपर्युक्त प्रतिमानों का संदर्भ तो दिया गया परन्तु बहुत कम विद्वानों ने ही उक्त प्रतिमान का प्रयोग प्रभाव क्षेत्र के सीमांकन के लिए किया। भारतवर्ष में ही महादेव एवं जयशंकर[20] प्रथम विद्वान थे जिन्होंने मैसूर नगर के प्रभाव क्षेत्र के सीमांकन के लिए उक्त प्रतिमान का सफलतापूर्वक प्रयोग किया था। उनके द्वारा प्रयुक्त सूत्र को निम्न रूप में व्यक्त किया जा सकता है –

$$Ii = \frac{Pi\ \alpha\ \beta r}{dij\ x\ y}$$

जहाँ Ii = नगरीय सेवा केन्द्र का सूचकांक

Pi = i नगरीय सेवा केन्द्र की जनसंख्या

$\alpha\beta r$ = जनसंख्या प्रभार

dij = i तथा j नगरों के मध्य दूरी

xy = दूरी प्रभार

इस सूत्र में उन्होंने किसी क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले नगरीय सेवाकेन्द्रों के प्रभाव क्षेत्र का सीमांकन करने के लिए जनसंख्या तथा दूरियों के सम्बन्ध में आवश्यक संशोधन किया। लगभग इसी प्रकार मिश्रा[21] ने भी इलाहाबाद नगर के पृष्ठ प्रदेश का सीमांकन करने के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया –

$$Iij = \frac{Pi\ Pj}{dij\ .\ x}$$

जहाँ Iij = i सेवा केन्द्र के प्रभाव का सूचकांक

Pi = i प्रथम सेवा केन्द्र की जनसंख्या

Pj = j द्वितीय सेवा केन्द्र की जनसंख्या

dij = i तथा j प्रथम सेवा केन्द्र के मध्य दूरी

x = दूरी पर, समय तथा यात्रा व्यय पर आधारित प्रसार

प्रस्तुत अध्ययन में प्रभाव क्षेत्र का उपयोग बड़े नगर केन्द्र द्वारा प्रभावित जनसंख्या एवं क्षेत्रफल से है परीक्षणोंपरान्त निम्नलिखित तथ्य उभर कर सामने आये–

1. बड़े आकार का नगर केन्द्र बृहद क्षेत्र एवं विशाल जनसंख्या को सेवा प्रदान करता है।
2. बड़े नगर केन्द्र पादानुक्रम के अनुसार छोटे आकार के नगर केन्द्रों को सेवायें प्रदान करते हैं, साथ ही उन्हें प्रभावित भी करते हैं।
3. यहाँ यह उल्लेखनीय है कि प्रत्येक नगर केन्द्र (पादानुक्रम में चाहे जितना छोटा हो) अपना प्रभाव क्षेत्र अवश्य रखता है।

सारणी क्रमांक 8.3

जनपद औरैया : नगरों का प्रभाव क्षेत्र

क्र0 सं0	नगर से	नगर तक	वास्तविक दूरी किमी0 में	विच्छेद बिन्दु किमी0 में
1	औरैया	दिबियापुर	19.50	11.01
2	औरैया	अजीतमल	22.60	11.83
3	दिबियापुर	विधूना	23.00	19.16
4	अजीतमल	फफूंद	18.20	11.30
5	दिबियापुर	फफूंद	09.10	05.94
6	विधूना	अछल्दा	13.90	04.66
7	दिबियापुर	अछल्दा	17.40	09.35
8	अजीतमल	अटसू	08.25	04.53
9	फफूंद	अटसू	10.90	06.98

8.7 गुरुत्व मॉडल विधि का प्रयोग –

वर्तमान समय में प्रभाव क्षेत्र के सीमांकन की गुरुत्व विश्लेषण विधियों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इस उपागम (विधि) का सबसे उपयोगी तथ्य यह है कि नगरीय सेवा केन्द्रों को नगर तंत्र के एक अंग के रूप में व्यवहृत किया जाता है। इन गुरूत्व विश्लेषण विधियों में से अधिकांश न्यूटन के गुरूत्वाकर्षण सिद्धान्त पर आधारित हैं। इन सिद्धान्तों के साथ छिपी हुई मूलभूल संकल्पना यह है कि किन्ही दो नगरीय सेवा केन्द्रों के पारस्परिक सम्बन्ध की मात्रा उन्ही दो नगरों की जनसंख्या की समानुपाती होती है तथा यह क्रिया उन दो नगरों के बीच की दूरी की व्युत्क्रमानुपाती होती है संशोधित रूप में इसे निम्न शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है –

$$Ai = \frac{Pi}{di\ j}$$

यहाँ Pi = नगरीय केन्द्र की जनसंख्या।

dij = दो नगरीय केन्द्रों के मध्य की दूरी।

Ai = आकर्षण शक्ति, उपनगरीय केन्द्र की।

प्रवाह विश्लेषण विधि –

किसी भी नगर केन्द्र का प्रवाह विश्लेषण दो तथ्यों पर आधारित होता है कि नगर केन्द्रों की ओर किस दिशा और किस गहनता से निकटवर्ती क्षेत्र से ग्राहक आते हैं। यह स्थापित तथ्य है कि प्रवाह की मात्रा नगर केन्द्र से दूरी बढ़ने के साथ–साथ घटती जाती है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि दूसरे निकटवर्ती नगर केन्द्र के लिए प्रवाह बढ़ना प्रारम्भ हो जाता है। यही वह बिन्दु होता है जहाँ दोनों नगर केन्द्रों के मध्य प्रवाह सीमा का निर्धारण होता है।

सर्वप्रथम 1929 में पार्क[22] महोदय ने इस प्रवाह विश्लेषण विधि का

प्रयोग किया था और उनका आधार समाचार पत्र का प्रसरण था। तत्पश्चात् 1950 में ग्रीन[23] और कैरूथर्स[24] (1957) ने प्रवाह परिधि के निर्धारण में बस सेवा को प्रमुख संकेतक माना था। ग्रीन ने प्रवाह रेखाचित्र का निर्माण कर बस सेवाओं की बारम्बारता को दर्शाया था। अपने अन्य शोध प्रपत्र में ग्रीन[25] ने 1967 में प्रवाह क्षेत्र निर्धारण हेतु 7 चरों का चयन किया जैसे – परिवहन, संचार, कृषि, मनोरंजन, शिक्षा, विनिर्माण तथा वित्तीय सेवाएं। मार्शल[26] महोदय ने 1969 में कहा कि ग्रीन महोदय का सिद्धान्त छोटे–छोटे सेवा केन्द्रों पर ही प्रभावी रूप से लागू होता है जबकि बड़े महानगरीय सेवा केन्द्रों के संदर्भ में इस विधि से उनका प्रवाह क्षेत्र सटीक निष्कर्ष नहीं प्रदान करता है।

जनपद औरैया में विभिन्न नगरों द्वारा सेवित जनसंख्या व क्षेत्रफल के आधार पर प्रभाव क्षेत्र के निर्धारण का प्रयास किया गया है। इस हेतु सर्वप्रथम प्रभाव क्षेत्र में आने वाले सेवित ग्रामों की संख्या, क्षेत्रफल एवं सेवित जनसंख्या को ज्ञात किया गया है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि औरैया नगरीय सेवा केन्द्र जनपद मुख्यालय होने के साथ–साथ अध्ययन क्षेत्र का सबसे बड़ा नगरी केन्द्र भी है जिसके द्वारा सबसे अधिक ग्रामों को सेवायें प्रदान की जाती हैं। औरैया नगर केन्द्र का आदर्श प्रभाव क्षेत्र 813.70 वर्ग कि0मी0 है जोकि सर्वाधिक है जबकि वास्तविक सेवित क्षेत्रफल 637.00 वर्ग कि0मी0 है इस सेवा केन्द्र द्वारा सेवित जनसंख्या 208669 है। यहाँ उल्लेखनीय तथ्य यह है कि वास्तविक सेवित क्षेत्रफल के आधार पर यह नगर केन्द्र प्रथम स्थान पर है।

इसी प्रकार वास्तविक सेवित क्षेत्रफल की दृष्टि से विधूना नगरीय केन्द्र का क्षेत्रफल सर्वाधिक 394.90 वर्ग कि0मी0 है जबकि नगर केन्द्र का वास्तविक सेवित क्षेत्रफल मात्र 270.75 वर्ग किमी0 है सेवित जनसंख्या की दृष्टि से औरैया नगरीय सेवा केन्द्र ही सर्वाधिक 209669 जनसंख्या को ही

सेवित करता है जबकि सेवा केन्द्र अछल्दा सबसे कम 6015 जनसंख्या को सेवित करता है। यदि सबसे न्यून आदर्श प्रभाव क्षेत्र देखा जाय तो नगरकेन्द्र अछल्दा का क्षेत्रफल 70.25 वर्ग कि0मी0 है जो कि अध्ययन क्षेत्र में सबसे न्यून है।

8.8 नगरों का प्रभाव क्षेत्र :-

ये नगर, जो ग्रामीण क्षेत्रों के संसाधनों के आधार पर विकसित होते हैं, प्रायः परस्परावलम्बी होते हैं। अर्थात् ग्राम्यांचलों से नगर को विभिन्न सुविधायें प्राप्त होती है जैसे दुग्ध, शाकभाजी, फल, खाद्यान्न, श्रम तथा औद्योगिक कच्चा माल आदि। इनके बदले नगर ग्राम्य क्षेत्रों को विभिन्न सेवा सुविधायें प्रदान करते हैं, चेतनता एवं जीवन्तता देते हैं। नगरों में सम्पादित होने वाली क्रियाओं से न केवल नगरों में निवास करने वाली जनसंख्या ही प्रभावित होती है। वरन् निकटवर्ती ग्राम्य–जन भी लाभान्वित होते हैं। इस प्रकार किसी नगर विशेष से पोषित क्षेत्र 'नगर प्रभाव क्षेत्र' कहलाता है। स्थानिक संगठन की दृष्टि से इसे भौगोलिक प्रदेश की संज्ञा दी जा सकती है। नगर प्रभाव क्षेत्र का विस्तार या प्रसार नगरीय कार्यो तथा विशिष्टताओं के प्रभाव के अनुपात में होता है। अर्थात प्रभाव क्षेत्र में विविधता (प्रसार–संकुचन) अवश्यम्भावी है। यह वैविध्य नगरीय सेवा सुविधाओं के स्वभाव व पोषक क्षमता पर आधारित है।

8.9 स्थानिक व्यवहारिक प्रतिरूप -

खाद्यान्न, शाकभाजी, दुग्ध, फल, कच्चे माल, श्रमिकों (बाल–युवा) आदि के मामले में नगरों की निर्भरता ग्राम्य क्षेत्रों पर निर्विवाद रूप से होती है। ग्रामीण जनसंख्या भी निकटस्थ नगरीय केन्द्र पर समाचार पत्र, मशीनरी, निर्मित माल, शिक्षा, तकनीकी प्रशिक्षण, चिकित्सा, प्रशासन, व्यापार, परिवहन, यातायात, संचार, रोजगार आदि के लिये निर्भर रहती है। इस भांति एक नगरीय केन्द्र कुछ ग्राम्य क्षेत्रों को सुविधायें प्रदान करता है और बदले में

स्वयं भी आवश्यक आवश्यकताओं की प्राप्ति करता है। अतः नगर विशेष से प्रत्यक्षतः सम्बन्धित क्षेत्र ही उस नगर का प्रभाव क्षेत्र कहलाता है, जिससे इसे नगर के प्रभाव की परिपूर्ति कहना अधिक श्रेयस्कर है। यातायात के साधन नगर को उसके चतुर्दिक के ग्रामीण परिवेश से सुसम्बद्ध रखते हैं। नगर का प्रभाव उस सीमा तक रहता है जहां तक परिवहन मार्गों द्वारा लोगों को आने जाने में सुविधा प्राप्त रहती है। सुविधाओं की वृद्धि से नगर और ग्रामीण क्षेत्रों में और भी समीप्य हो जाता है।

नगर आयोजकों ने भी यह स्वीकारा है कि नगर का उसके प्रभाव क्षेत्र से अन्योन्याश्रित सम्बन्ध रहता है। यह जानकारी प्राप्त करना अभीष्ट है कि जिस प्रकार एक नगर और उसके समीपवर्ती वातावरण पर उनके प्रभाव का अध्ययन करते हैं। इसवातावरण में नगर अपने समीपस्थ क्षेत्रों के संरक्षण का कार्य करता है। नगर के प्रभाव का वह क्षेत्र जो उसके यत्र–तत्र विस्तीर्ण होता है, को सीमाबद्ध करके अध्ययन द्वारा निरूपित किया जाता है। नगर ग्रामीण क्षेत्र पर व्यापक प्रभाव डालता है। नगरों को भोजन गांवों से प्राप्त होता है। नगर अपने प्रदेश का प्रतिबिम्ब है। नगरीय जनसंख्या एक बड़ी मात्रा में उसी क्षेत्र की उपज होती है। नगर के उद्योगों के लिये श्रम, कच्चा माल, तथा अन्य सेवायें इस प्रकार व्यवस्थित की जाती हैं कि प्रदेश की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके और प्रभाव कटिबन्ध के आकार के अनुसार इनकी वृद्धि होती है। नगरीय प्रदेश और प्रभाव कटिबन्ध प्रायः एक होते हैं जहां प्रभाव पारस्परिक होता है। यह वह कटिबन्ध होता है जहां ये प्रभाव सर्वाधिक होते हैं और दूसरे नगर का प्रभाव इसकी तुलना में बहुत ही कम होता है। नगर–प्रभाव जितनी दूर तक पड़ता है वे समस्त कटिबन्ध नगरीय प्रदेश के अन्तर्गत आते हैं।

पीटर स्कालर ने 'अमलैण्ड' (Umland) शब्द का प्रयोग किया है। इनके अनुसार 'अमलैण्ड वह क्षेत्र है, जहां नगर के साथ संचार व्यवस्था

बहुत घनिष्ठ एवं नियमित है।' पृष्ठभूमि से आशय उस क्षेत्र से है जिसके साथ संचार अधिक नहीं है बल्कि कुछ कम हो और प्रभाव क्षेत्र वह है जहां संचार अपवाद स्वरूप हो। जैसा कि रावर्ट डिकिन्सन ने निर्दिष्ट किया है कि प्रत्येक नगरीय बसाव, चाहे वह बड़ा हो अथवा छोटा, कमोवेश एक प्राकृतिक सम्पदा है। नगर का वैशेषिक अस्तित्व अवलम्बित ग्राम्यादि क्षेत्रों के लिये किये गये सेवा प्रकार्यो पर निर्भर करता है। मध्य आकार वाले नगर निकटवर्ती विस्तीर्ण क्षेत्र पर निर्भर करते हैं। नगर–उत्पाद एवं तैयार माल के विक्रय एवं आर्थिक–वित्तीय संसाधनों का लाभ उन क्षेत्रों तक पहुंचाने की व्यवस्था रहती है। नगर के वर्तमान वृद्धि तथा वृद्धि या विकास की सम्भावनाओं का तर्क सम्मत तथा समुचित निदान प्रदेश में स्थित बाजारों के विश्लेषण द्वारा सम्भव है।

'अमलैण्ड' जर्मन भाषा का शब्द है, जो भूगोल में विशेष पारिभाषिक शब्द के रूप में प्रयुक्त होता है। वैसे यह शब्द जर्मन भाषा के शब्दकोष में सन् 1883 से मिलता है, किन्तु उस समय इसका विशेष निश्चित अर्थ नहीं था। आजकल इसका अर्थ है –किसी नगर की आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभाव परिवृत्ति। डा0 आर0एल0 सिंह ने अपनी पुस्तक 'बनारस : ए स्टडी इन अरबन ज्योग्राफी' (Benaras : A Study in Urban Geography) नामक पुस्तक में उस शब्द की व्युत्पत्ति और व्याख्या पर प्रकाश डाला है। उन्होंने लिखा है, 'वह क्षेत्र, जिसमें प्रदेश और नगर सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक दृष्टि से परस्पर सम्बन्धित होते हैं, उस नगर विशेष का 'अमलैण्ड' कहलाता है। कुछ लोग अमलैण्ड शब्द के लिये नगरीय अन्तर्देश या अरबन हिंटरलैंड (Urban Hinterland) शब्द का भी प्रयोग करते हैं। डा0 ए0ई0 स्मेल्स ने अमलैण्ड शब्द की जगह अरबन फील्ड (Urban Field) शब्द का प्रयोग करना अधिक उपयुक्त समझा। डॉ0 मेयर का मत है कि जर्मनी भाषा में जिसे अमलैण्ड कहते हैं, स्मेल्स उसे अरबन फील्ड कहते हैं और अमेरिका का भूगोलवेत्ता उसे ही अरबन रीजन (Urban Region) कहता हैं

तथा कुछ लोग इसे अरबन हिन्टरलैण्ड (Urban Hinterland) कहना अनुचित नहीं समझते हैं।

इस प्रकार 'नगर प्रदेश' वह क्षेत्र है जहां नगर तथा उसके चतुर्दिक स्थित क्षेत्र में सघन अन्तर्क्रिया दृष्टव्य हो, अर्थात् नगर के उद्योगों के उत्पादनों का उपभोग उसके प्रदेश द्वारा किया जाये साथ ही अन्य सेवा सुविधाएं यथा – थोक–विक्रय, तकनीकी शिक्षा, रोजगार इत्यादि भी उसके द्वारा प्रदान की जायें। इन नगर प्रदत्त सेवा सुविधाओं के एवज में, प्रदेश नगर को सम्यक रूप से आवश्यक आवश्यकताओं की उपलब्धि कराये।

8.9.1 शैक्षिक सेवा क्षेत्र –

शैक्षणिक संस्थाओं में तिलक महाविद्यालय, राजकीय इण्टर कालेज (लड़कों तथा लड़कियों दोनों के लिये) महात्मा गांधी इण्टर कालेज, नेशनल इण्टर कालेज, राजर्षि रामपाल सिंह वैदिक बाल मन्दिर, आचार्य द्विवेदी इण्टर कालेज आदि प्रमुख हैं।

नगर प्रभाव क्षेत्र का विस्तार इस प्रकार्य के अनुसार मुख्य रूप से जनपद सीमा के अन्तर्गत ही निर्धारित होता है क्योंकि उच्च शिक्षा तथा औद्योगिक प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु अधिकांश लाभान्वित छात्र जनपद के ही ग्रामीण क्षेत्रों से नगर केन्द्रों को ही आप्रवास करते हैं। जनपद के अतिरिक्त जालौन, इटावा तथा कन्नौज जनपदों के भी छात्र तिलक महाविद्यालय, औरैया, पालीटेक्निक आई0टी0आई0 तथा अजीतमल, बकेवर, दिबियापुर, आदि में महाविद्यालीय शिक्षा एवं प्रशिक्षिण प्राप्त करने हेतु आते हैं किन्तु उनकी संख्या अल्प होने के कारण इन जिलों को यहॉ के नगरों के प्रभाव क्षेत्र में नहीं सम्मिलित किया जा सकता है।

दुग्ध आपूर्ति के अनुसार प्रभाव क्षेत्र की परिवृत्ति :-

नगर का प्रभाव क्षेत्र दुग्ध आपूर्ति के मापदण्ड के अनुसार जनपद सीमान्तर्गत ही आता है। 15 किमी0 चतुर्दिक के ग्रामीण क्षेत्रो ंसे नगर केन्द्र को दुग्ध की आपूर्ति तीव्रतर होती है। सहकारी दुग्ध वाहन नगर से लगभग 50 किमी0 की दूरी वाले क्षेत्रों से सहकारी डेरी के लिये श्वेत क्रान्ति अथवा 'आपरेशन फ्लड' को प्रोत्साहित करने हेतु बड़े–बड़े डिब्बों में दूध एकत्र करते हैं। इसके द्वारा जनपद के बेला, विधूना, याकूबपुर, सहार आदि दूरवर्ती नगरों से मोबाइल वैन द्वारा दुग्ध लाया जाता है।

8.9.2 प्रशासनिक सेवा क्षेत्र :-

प्रशासनिक केन्द्र होने के कारण जनपद के सभी स्थलों के नागरिक कलेक्ट्रेट न्यायालय तथा अन्य प्रशासनिक कार्यालयों आदि से प्रत्यक्षतः प्रभावित होते हैं।

समाचार पत्र प्रसार कटिबन्ध :-

औरैया नगर से निकलने वाले साप्ताहिक पत्र प्रभावी भूमिका नहीं निभाते हैं इसके अतिरिक्त कई मासिक पत्र भी निकलते हैं जिनका प्रसार क्षेत्र जनपद सीमा के अन्तर्गत अधिक पाया जाता है।

अस्तु विभिन्न सूचकांकों के निर्धारण से स्पष्ट होता है कि सेवा सुविधाओं का विस्तार यद्यपि दूरस्थ क्षेत्रों में भी व्याप्त है, किन्तु औरैया जनपद की सीमा के परे बहुत कम ही सेवा प्रसार देखने को मिलता है। अतएव, जनपद सीमा को ही नगर प्रभाव क्षेत्र माना जा सकता है, नगर प्रभाव क्षेत्र के उप विभाग निम्नलिखित हैं जो सारिणी से स्पष्ट होते हैं।

1. (अ) नगर केन्द्र :-

नगर क्रोड नगर पालिका के अन्तर्गत आने वाला क्षेत्र नगर क्रोड कहलाता है।

1. (ब) प्रत्यक्ष क्षेत्र :-

औरैया विनियोजित क्षेत्र इसके अन्तर्गत आता है। यह नगर के प्रत्यक्ष प्रभाव में है यहां नगरीय कार्यो का सर्वाधिक प्रभाव दृष्टव्य है। इसे उच्च सघनता मण्डल भी कहा जा सकता है।

2. नगर एरिया क्षेत्र :-

नगर एरिया क्षेत्र के अन्तर्गत औरैया तहसील का क्षेत्र आता है। इसे मध्यम सघनता कटिबन्ध भी कहा जा सकता है।

3. नगर प्रभाव क्षेत्र :-

जनपद की तहसीलों का क्षेत्र अर्थात् समस्त जनपद का भूभाग इसके प्रभाव क्षेत्र में आता है। इसे निम्न सघनता कटिबन्ध कहा जा सकता है।

8.9.3. चिकित्सा सेवा क्षेत्र -

जनपद औरैया में चिकित्सा की समुचित सुविध केवल जिला मुख्यालय पर है यद्यपि वहॉ चिकितसा का विशेषीकरण नहीं है। अन्य कस्बों में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों के अलावा निजी चिकित्सालय, चिकित्सक विद्यमान है। जो प्राथमिक उपचार तक ही सीमित है। अतः चिकित्सा का सेवा क्षेत्र न्यून है।

8.9.4. दुग्ध आपूर्ति क्षेत्र -

औरैया नगर के 'नगर प्रदेश' को निर्धारित तथा सीमाबद्ध करने के लिये विभिन्न मानदण्डों को आधार माना जा सकता है। नगर प्रदेश के सीमांकन हेतु दुग्ध आपूर्ति मण्डल का निर्धारण किया जाना समीचीन प्रतीत होता है। दुग्ध आपूर्ति मण्डल जनपद के आन्तरिक तथा नगर के निकटस्थ ग्रामीण क्षेत्रों से सम्बन्धित है साथ ही नगर तथा ग्राम्य क्षेत्रों के मध्य

अन्तर्सम्बन्ध को सुस्पष्ट करने वाला मुख्य निर्धारक तथ्य है। औरैया नगर समस्त जनपद के लिये एक महत्वपूर्ण केन्द्र है। नगर अपने निकटवर्ती क्षेत्र पर आधारभूत आवश्यकताओं जैसे दुग्ध, शाकभाजी, कच्चा माल तथा श्रम आपूर्ति हेतु अवलम्बित है। जनपद औरैया की दोनों तहसीलों औरैया तथा विधूना तहसीलें पूर्णरूपेण इस नगर के प्रभाव क्षेत्र के अन्तर्गत हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश में पुनर्निर्माण का युग आया। नगर और ग्राम्य सभी क्षेत्रों में विकास योजनाओं का क्रियान्वयन हुआ।

औरैया नगर जो कि प्रारम्भ में एक अविकसित क्षेत्र का प्रतिनिधि नगर रहा है, भी प्रगति पथ पर अग्रसर हुआ। सन् 1969 के पश्चात इस जनपद में कई क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। नगर में विकास–कार्य त्वरित गति से आगे बढ़ने लगे। रिक्त भूमि में भवन निर्माण कार्य प्रारम्भ होने लगा। आवासीय भवनों की वृद्धि के कारणों में राजनैतिक, शैक्षणिक, प्रशासनिक (न्यायालयीय), औद्योगिक तथा परिवहन, व्यापार, स्वास्थ्य, सुरक्षा आदि से सम्बन्धित क्रियाकलापों का प्रमुख योगदान रहा। विविध नगरीय सेवा सुविधाओं ने ग्रामीण क्षेत्रों के जरूरतमंद तथा महत्वाकांक्षी व्यक्तियों को नगर केन्द्र की ओर आकृष्ट किया साथ ही बाह्य जनपदों अथवा देश के अन्य भूभागों से विशिष्ट वर्ग का आगमन उनके विशेषीकृत कार्यो अथवा गुणों के आधार पर हुआ।

8.9.5 दैनिक श्रमापूर्ति क्षेत्र –

जनपद के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों से अकुशल तथा कुशल श्रमिकों का अधिकांश (लगभग 85 प्रतिशत) भाग प्राप्त होता है जबकि जनपद के बाह्यवर्ती सुदूर अंचलों से जालौन, इटावा, व भिण्ड (म0प्र0) आदि से भी श्रमिक कार्य की खोज में यहां आते हैं, किन्तु कार्य करने वाली जन शक्ति का अधिक प्रभाव क्षेत्र जनपद सीमा के ही अन्तर्गत माना जाता है।

8.9.6. शाक-भाजी क्षेत्र :-

जनपद मुख्यालय को आस पास के लगभग 15 किमी0 दूर स्थित ग्रामीण क्षेत्र से प्रतिदिन ताजी सब्जियां तथा फल आदि प्राप्त होते हैं। इसके प्रभाव का क्षेत्र दुग्ध आपूर्ति क्षेत्र से कम ही विस्तृत है।

8.9.7 एवं 8.9.8 दैनिक एवं साप्ताहिक बाजार क्षेत्र -

विपणन केन्द्रों की स्थानिक एवं कालिक अवस्थिति की विवेचना महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी के आधार पर नगर उपान्त में विपणन क्रिया का परिसंचरण स्पष्ट किया जायेगा। इसलिए यहॉ बाजार केन्द्रों की स्थापित एवं कालिक दूरी पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया गया है। जनपद औरेया में बाजारों की प्रकृति के आधार पर बाजारों की संख्या 77 है। अतः बाजारों की प्रकृति के आधार पर इनको 4 भागों में विभक्त किया गया है। जो निम्नवत् है नियताकालिक बाजार, फुटकर नियतकालिक बाजार, फुटकर दैनिक, फुटकर एवं थोक बाजार। जनपद में नियतकालिक बाजारों की संख्या सर्वाधिक 35 है। जिनका प्रतिशत 45.45 है। फुटकर नियतकालिक बाजारों की सख्या 27 है जिनका प्रतिशत 35.06 है जनपद में फुटकर दैनिक बाजार मात्र एक सहायल में ही है। इसी प्रकार फुटकर एवं थोक बाजारों की संख्या जनपद में 14 है जिनका प्रतिशत 18.10 है।

जनपद में 7 नगरीय बाजार (प्रतिदिन) का 70 ग्रामीण बाजार केंद्र है। स्थानिक रूप से यह बाजार विकास केंद्रों की संकल्पना से समानता रखते है। जिलें में बाजारों की आकारिकी के अनुसार औरैया प्रथम श्रेणी का नगर है। यह जिल का सबसे बड़ा बाजार है यहॉ वस्तुओं की बिक्री बड़े पैमाने पर होती है तथा उपभोक्ताओं का आवागमन भी अधिक रहता है। जनपद का सबसे छोटा बाजार औरैया तहसील के अन्तर्गत ग्राम ओय है। जहॉ पर वस्तुओं की बिक्री भी कम होती है और उपलब्धता भी कम रहती है।

सारणी क्रमांक 8.4
औरैया जनपद : दैनिक बाजार

क्र0	बाजार केन्द्र का नाम	जनसंख्या	प्रतिशत
1	औरैया (औरैया)	64740	31.77
2	विधूना (विधूना)	24789	12.16
3	बाबरपुर (अजीतमल)	24549	12.05
4	दिबियापुर (भाग्यनगर)	20595	10.11
5	फफूंद (भाग्यनगर)	15340	07.53
6	अटसू (अजीतमल)	10593	05.20
7	सहायल (सहार)	9138	04.48
8	अछल्दा (अछल्दा)	8361	04.10
9	कुदरकोट (एरवा कटरा)	5642	02.76
10	अयाना (अजीतमल)	4703	02.30
11	उमरैन (एरवा कटरा)	4365	02.14
12	पुरवा दान सहाय (सहार)	3600	01.76
13	पाता (अछल्दा)	2871	01.40
14	लहरापुर (सहार)	2800	01.37
15	पातीराम (विधूना)	1090	00.53
16	ईश्वरपुर (एरवा कटरा)	593	00.29

अध्ययन क्षेत्र में 7 बाजार नियमित है। जनपद का क्षेत्रफल 2035. 99 वर्ग किलोमीटर है जिसमें 1179993 जनसंख्या (ग्रामीण क्षेत्रों सहित) निवास करती है। समान वितरण करने पर प्रत्येक बाजार का 26.44 वर्ग किमी0 क्षेत्र को अपनी सेवायें प्रदान करता है तथा 15325 लोगों को अपनी सेवाएं प्रदान करता है। क्षेत्र के समस्त नियमित बाजार अपने प्रभाव क्षेत्र में आने वाली जनसंख्या को सेवा प्रदान करते है तथा समस्त नियमित बाजार औरैया बाजार से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुये है एवं औरैया तथा इटावा नगर पर ही आश्रित

है। समुचित रूप से विकसित यातायात मार्ग तथा एक ही प्रकार की स्थलाकृति का प्रभाव बाजारों के विकास पर दिखाई पड़ता है। दो नगरों के मध्य स्थित किसी क्षेत्र व नगर में निवास करने वाली जनसंख्या प्रतिस्पर्धा का सामना करते हुए दोनो नगरों की बिक्री का कितना भाग या प्रतिशत प्राप्त करती है या दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैकि कोई बाजार या नगर कितने क्षेत्र पर अपना प्रभाव रखता है।

प्रस्तुत अध्याय का सारांश यह निकलता है कि गॉवों और नगरों में पारस्परिक अन्तर्सम्बन्ध विद्यमान है क्योंकि जनपद के नगरों का प्रभाव क्षेत्र उनकी पसंद पर निर्भर करता है। इसका तात्पर्य यह निकला कि परिकल्पना नं0 4 सत्य साबित हो रही है। इस परिकल्पना का सत्यापन करने के लिये सहसम्बन्ध के सूत्र $r = 1-6\Sigma d^2 / n^3-n$ का प्रयोग किया गया है जिसका परिणाम $r = +9.0$ आता है। अतः इनमें धनात्मक के सहसम्बन्ध है जोकि परिकल्पना की सत्यता कि पुष्टि कर रहा है।

Reference/सन्दर्भ

1. Gibbs, J.P, (Edit), "Urban Research methods; D.Van Nostrand Company Inc. Princeton, New Jersey, 1966, p. 544.

2. Mishra, R.P. & Bhooshan, B.S., Role of small and Intermediate Towns in the Development of Mandya District, India, in Bhooshan B.S. (Edit), Towards Alternative Settlement strategies, Heritage Publishers, 1980, p. 107-216, quoted at page 162.

3. Singh, U., 'Umland of Allahabad', the national Geographical Journal of India, Vol. VII, pt 1, 1961, p. 38.

4. Allix, A, Lafoire de concelin, Annales de University de Grenoble, 26, 1914, pp. 359-94.

5. Singh, R.L., Banaras : A study in Urban Geography", Nand Kishor and Brothers, Varanasi, 1955.

6. Dixit, R.S., On the Delimitations of the Umland of a metropolis Kanpur : A case study, National Geographer, 12, I, June, pp. 77-92, 1977.

7. Green, F.H.W., Urban Hinterland in England &

Wales : An Analysis of Bus services, in Gibbs, J.P. (Edit) Urban Research Methods, D.Van Nostrand Company Ine. 1966, pp. 263-285.

8. Brush, J.E., The Hierarchy of Central Places in South Western Wisconsin, Geographical Review 43, 1953, pp. 380-402.

9. Bracy, H.E., Towns as Rural Service Centres : An Index of Centrality with special Reference to somerset, Transactions and papers-Institute of British Geographers, Vol. 19, 1954, pp. 95-105.

10. Alam, S.M., Hyderabad and Secunderabad twin cities - a study in Urban Geography, Allied publishers, Bombay, 1965.

11. Mishra, H.N., The concept of Umland : A Review national Geographer, 6, 1971, pp. 57-63.

12. Mishra, H.N., Urban System of a Developing Economy, IIDR, 1984.

13. Rugg, D.S., "Spatial Foundation of Urbanisation", W.C., Brown Company publishers, 1972, p. 12.

14. Dutta, A.K., Umland of Jamshedpur Geographical Review of India, 26, 1963, pp. 84-98.

15. Mukherjee, A.B., The Umland of Modinagar, The National Geographical Journal of India, 8, 1962, pp. 250-269.

16. Nath, V., The concept of Umland and its Delimitation, The Deccan Geographer, L, 1962, p. 34.

17. Allix, A., Op. cit.

18. Jefferson, M., The Distribution of Worlds city Folks : A study in comparative civilization; Geographical Review, 21, 1931, p. 453.

19. Reilly, W.J., The Law of Retail Gravitation, Kincker bocker Press, New York, 1931, Cuoted in Northan, R.M. Urban Geography John Wiley and Sons, 1975, p. 117.

20. Mahadev, P.D. & Jay Shankar, D.C., "Concept of City Region : An approach with a case study, Indian Geographical Journal, 44, 1969, pp. 15-22.

21. Mishra, H.N., Empirical and Theoretical Umland of Allahabad : A case

study Geographical Review of India, 39, 1977, p. 314.

22. Park, R.E., Urbanization as measured by news paper circulation, American Journal of Sociology, 35, 1929, pp. 60-79.

23. Green F.H.W., "Urban Hinterlands in England and Wales : an analysis of Bus services. Geographical Journal, 116, 1950, pp. 64-81.

24. Carrutheres, I., A classification of Service Centres in England & Wales, Geographical Journal, 123, 1957, pp. 371-385.

25. Green. H.L., Hinterland Boundaries of New York city & Boston in Southern New England in H.M. Mayer and C.F. Ckohn (ed), Readings in Urban Geography, central book depot. 1967, Allahabad, pp. 185-201.

26. Marshall, J.U., "The Location of Service towns : An approach to the Analysis of Central place systems, University of Toronto Press, 1969, p. 70.